Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 13

No. of Printed Pages – 7

SS–21–Hindi Sah.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2017

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2017

हिन्दी साहित्य

समय : 3¼ **घण्टे**

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं ।

3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें ।

4) जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

5) उत्तर यथासम्भव निर्धारित शब्द–सीमा में ही सुपाठ्य लिखें।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

खण्ड – 'अ'

1) निम्न पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 30 शब्द)

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती है।
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
जनता की रोके राह समय में ताव कहाँ?
वह जिधर चाहती काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्राब्द का अंधकार
बीता, गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
यह और नहीं कोई, जनता के स्वप्न अजेय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते आते हैं।

क) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

ख) भूडोल और बवंडर कब उठते हैं? [1½]

ग) 'कोपाकुल' शब्द का विश्लेषण कीजिए। [1½]

घ) जनता की हुँकारों का क्या असर होता हैं? [2]

ङ) तिमिर का वक्ष चीरकर कौन आ रहा हैं? [2]

2) निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 20 शब्द)

हम साहित्यकारों में कर्मशक्ति का अभाव है। यह एक कड़वी सच्चाई है, पर हम उसकी ओर से आँखें नहीं बन्द कर सकते। अभी तक हमने साहित्य का जो आदर्श अपने सामने रखा था, उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। कर्माभाव ही उसका गुण था, क्योंकि अक्सर कर्म अपने साथ पक्षपात और संकीर्णता को भी लाता है। अगर कोई आदमी धार्मिक होकर अपनी धार्मिकता पर गर्व करे, तो इससे कहीं अच्छा है कि वह धार्मिक न होकर 'खाओ–पीओ मौज करो' का कायल हो। ऐसा स्वच्छन्दाचारी तो ईश्वर की दया का अधिकारी हो भी सकता है, पर धार्मिकता का अभिमान रखने वाले के लिए इसकी सम्भावना नहीं। जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मन – बहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा–गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हलका करना था, तब तक इसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी।

क) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

ख) लेखक के अनुसार कड़वी सच्चाई क्या है? [1]

ग) कर्म अपने साथ क्या लेकर आता है? [2]

घ) धार्मिकता का अभिमान करने वाले के लिए क्या संभव नहीं हैं? [2]

ङ) साहित्य में किसकी प्रधानता होनी चाहिए? [2]

खण्ड – 'ब'

3) किसी एक विषय पर लगभग 450 शब्दों में निबन्ध लिखिए। [8]

i) राजनीति में युवाशक्ति

ii) वैश्विक परिवेश में आतंकवाद

iii) देश की वर्तमान समस्याएँ

iv) समाज एवं राष्ट्र के विकास में नारी की बढ़ती भूमिका

4) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 - 20 शब्दों में लिखिए। [4 × 2 = 8]

क) अच्छे लेखन की एक विशेषता बताइये।

ख) रेडियो माध्यम की किसी एक असुविधा को इंगित कीजिए।

ग) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय एवं उपयोगी शैली कौनसी है?

घ) टिप्पणी किसे कहते हैं?

5) 'कैसे बनती है कविता' पाठ के आधार पर बताइये कि कविता के निर्माण में किन – किन तत्वों का समावेश किया जाता है? अपने मनपसंद विषय पर 8 पंक्तियों की कविता लिखिए। **[4]**

खण्ड – 'स'

6) निम्न पद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **[7]**

1947 के बाद से
इतने लोगों को इतने तरीकों से
आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील होते देखा है
कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है
पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए
तो जान लेता हूँ
मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है
मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ कंगाल या कोढ़ी
या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और
एक मामूली धोखेबाज
लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच लज्जा परेशानी
या गुस्से पर आश्रित
तुम्हारे सामने बिलकुल नंगा निर्लज्ज निराकांक्षी
मैने अपने आपको हटा लिया है हर होड़ से
मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं
मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम
कम से कम एक आदमी से तो निश्चिंत रह सकते हो

अथवा

भूपति मरन पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी।।

देखि न जाहिं बिकल महतारीं। जरहिं दुसह जर पुर नर नारी।।

महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला।।

सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि बेष लखन सिय साथा।।

बिन पानहिन्ह पयादेहिं पाएँ। संकरू साखि रहेउँ ऐहि घाएँ।।

बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू।।

अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई।।

जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी। तजहिं विषम बिषु तापस तीछी।।

7) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

क) पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, ऐ भँवरा ए काग।

सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।।

उपर्युक्त पंक्तियों का भाव – सौन्दर्य लिखिए। [2]

ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे – भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर उँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा।

उपर्युक्त पंक्तियों का शिल्प – सौन्दर्य लिखिए। [2]

8) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

क) 'मैने देखा एक बूँद' कविता के माध्यम से कवि अज्ञेय ने 'बूँद' एवं 'सागर' के सन्दर्भ में कौनसे दर्शन का प्रतिपादन किया है? [2]

ख) 'सिन्धु तर्यो उनको बनरा ....' पद्यांश में अंगद द्वारा राम के प्रताप का वर्णन किया गया है, इसे अपने शब्दों में लिखिए। [2]

खण्ड – 'द'

9) निम्न गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **[7]**

बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारूण नि:श्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रूद्ध अज्ञात जल स्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है। और मूर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरी कांतार में भी ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी–शक्ति है। प्राण ही प्राण को पुलकित करता है, जीवनी शक्ति ही जीवनी–शक्ति को प्रेरणा देती है। दूर पर्वतराज हिमालय की हिमाच्छादित चोटियाँ हैं, वहीं कहीं भगवान महादेव समाधि लगाकर बैठे होंगे; नीचे सपाट पथरीली जमीन का मैदान है, कहीं – कहीं पर्वतनंदिनी सरिताएँ आगे बढ़ने का रास्ता खोज रही होंगी – बीच में यह चट्टानों की ऊबड़ खाबड़ जटाभूमि है – सूखी, नीरस कठोर।

अथवा

यदि समाज में मानव–संबंध वही होते जो कवि चाहता है, तो शायद उसे प्रजापति बनने की जरूरत न पड़ती। उसके असंतोष की जड़ ये मानव – संबंध ही हैं। मानव – संबंधों से परे साहित्य नहीं है। कवि जब विधाता पर साहित्य रचता है, तब उसे भी मानव–संबंधों की परिधि में खींच लाता है। इन मानव –संबंधों की दीवाल से ही हैमलेट की कवि सुलभ सहानुभूति टकराती है और शेक्सपियर एक महान ट्रेजेडी की सृष्टि करता है। ऐसे समय जब समाज के बहुसंख्यक लोगों का जीवन इन मानव संबंधों के पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने लगे, सींकचे तोड़कर बाहर उड़ने के लिए आतुर हो उठे, उस समय कवि का प्रजापति रूप और भी स्पष्ट हो उठता है। वह समाज के द्रष्टा और नियामक के मानव–विहग से क्षुब्ध और रूद्धस्वर को वाणी देता है।

10) निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **[2 × 2 = 4]**

(उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द)

क) 'प्रेमघन की छाया स्मृति' नामक संस्मरण के लेखक शुक्ल जी ने उनकी विनोदप्रियता को भी उजागर किया है। बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' की विनोदप्रियता का उदाहरण पाठ के आधार पर प्रस्तुत कीजिए।

ख) पत्थर पूजे हरि मिलें, तो तू पूज पहार।
इससे तो चक्की भली, पीस खाय संसार।।
कबीर के इस दोहे से आप कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

ग) असगर वजाहत की कहानी 'साझा' में हाथी ने किसान से गन्ने की फसल का बँटवारा कैसे किया? कहानी में 'हाथी' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए।

11) कवि घनानन्द अथवा फणीश्वरनाथ 'रेणु' का साहित्यिक परिचय दीजिए। **[4]**

खण्ड – 'य'

12) निम्न प्रश्नों में किन्हीं चार के उत्तर (प्रत्येक को) लगभग 50 शब्दों में लिखिए : [4 × 2 = 8]

क) 'आरोहण' पहाड़ी लोगों की जीवनचर्या का भाग है, किन्तु वही आरोहण किसी को नौकरी भी दिला सकता है। पाठ के आधार पर बताइये।

ख) 'मां की ममता' किसी प्रयोजन या उद्देश्य के लिए है ''बिस्कोहर की माटी'' पाठ में लेखक ने मां की ममता का वर्णन किस उदाहरण से किया है?

ग) 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर 'खाऊ उजाड़ू सभ्यता' का आशय स्पष्ट करें।

घ) 'डग–डग रोटी, पग–पग नीर' यह उक्ति किसके बारे में कही गई है व क्यों?

ङ) 'ऐसे कितने फूल थे जिनकी चर्चा फूलों के रूप में नहीं होती' 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर इन फूलों के बारे में लिखिए।

13) ''भिखारियों के लिए धन–संचय पाप–संचय से कम अपमान की बात नहीं है।'' सूरदास की झोंपड़ी पाठ से उद्धृत इस कथन की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विवेचना कीजिए। [6]